INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	Department: Hindi	Date of submission:
Worksheet No.10	Topic: **अर्थ ग्रहण**	Note: Please file in portfolio

संसार के सभी देशों में शिक्षित व्यक्ति की सबसे पहली पहचान यह होती है कि वह अपनी मातृभाषा में दक्षता से काम कर सकता है। केवल भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें शिक्षित व्यक्ति वह समझा जाता है जो अपनी मातृभाषा में दक्ष हो या नहीं, किंतु अंग्रेजी में जिसकी दक्षता पर कोई संदेह न हो। संसार के अन्य देशों में सुसंस्कृत व्यक्ति वह समझा जाता है जिसके घर में अपनी भाषा की पुस्तकों का संग्रह हो और जिसे बराबर यह पता रहे कि उसकी भाषा के अच्छे लेखक और कवि कौन हैं तथा समय-समय पर उनकी कौन-सी कृतियाँ प्रकाशित हो रही हैं । भारत में स्थिति दूसरी है । यहाँ प्राय: घर में साज-सज्जा के आधुनिक उपकरण तो होते हैं किंतु अपनी भाषा की कोई पुस्तक या पत्रिका दिखाई नहीं पड़ती। यह दुरवस्था भले ही किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है किंतु जब तक यह दुरवस्था कायम है, हमें अपने-आप को शिक्षित और सुसंस्कृत मानने का न्याय संगत अधिकार नहीं है।

प्रश्न-1 उपयुक्त शीर्षक चुनिए -

क) शिक्षित व्यक्ति की पहचान

ख) भारतीय शिक्षित की पहचान

ग) मातृभाषा का तिरस्कार

घ) भारतीय शिक्षितों का अंग्रेजी -मोह

प्रश्न-2 दुरवस्था में कौन सा उपसर्ग है?

क) दु

ख) दूर

ग) दुर्

घ) आ

प्रश्न-3 यहाँ किस ऐतिहासिक प्रक्रिया की ओर संकेत है?

क) भारत में बढ़ते भौतिकवाद की ओर

ख) भारत में अफगानियों के आक्रमण की ओर

ग) भारतीय अंग्रेजी मानसिकता की गुलामी की ओर

घ) भारत के लोगों की स्वार्थपरता की ओर

प्रश्न-4 भारत में शिक्षित व्यक्ति किसे माना जाता है?

क) जिसे हिंदी आती हो

ख) जिसे मातृभाषा आती हो

ग) जिसे अंग्रेजी आती हो

घ) जिसने अंग्रेजी में पढ़ाई की हो

प्रश्न- 5 संसार के अन्य देशों में सुसंस्कृत व्यक्ति किसे मानते हैं?

क) जो संस्कृत जानता हो

ख) जो स्वभाषा जानता हो

ग) जिसके घर में स्वभाषा की पुस्तकें हो

घ) जिसे स्वभाषा, स्वसाहित्य और उनके लेखकों से गहरा जुड़ाव हो

नैतिक और सामाजिक मूल्यों को समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए निचले सोपान से कार्य करना होता है। बालक-मन के सभ्य संस्कारों को जमाना और विकसित करना सरल होता है। बाल्यकाल में तथा शिक्षा काल के दौरान जीवन में जैसे मूल्यों को अपनाया जाता है कालांतर में वे ही हमारे व्यक्तित्व के अंग बन जाते हैं। इसी प्रकार जो कुसंस्कार इस अवधि में पल्ले पड़ जाते हैं बाद में उनसे छुटकारा पाना काफी कठिन हो जाता है क्योंकि वे आदतों का रूप ले लेते हैं। नैतिक शिक्षा संकुचित दृष्टिकोण से मुक्ति दिलाने का माध्यम है न कि पारस्परिक सद्भाव में दरार पैदा करने का। दरारें निहित स्वार्थ की पूर्ति के प्रति ही समर्पित हो जाने के कारण पड़ती

हैं। अतः शिक्षक को आदर्श बनकर भावी समाज के निर्माण में रचनात्मक योगदान देना होगा अन्यथा नैतिकता के बिना हमारी भौतिक समृद्धि भी व्यर्थ हो जाएगी।

प्रश्न-1 किन मूल्यों को समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए निचले सोपान से कार्य करना होगा ?

क) नैतिक

ख) सामाजिक

ग) दोनों

घ) अन्य

प्रश्न 2 किस काल में संस्कार अधिक विकसित होते हैं?

क) वृद्धावस्था में

ख) युवावस्था में

ग) बाल्यकाल में

घ) भूतकाल में

प्रश्न 3 कौन सी शिक्षा संकुचित दृष्टिकोण से मुक्ति दिलाने का माध्यम है?

क) भौतिक

ख) आत्मिक

ग) धार्मिक

घ) नैतिक

प्रश्न-4 किसको आदर्श बनाना होगा ?

क) शिक्षक को

ख) माता को

ग) पिता को

घ) मित्र को

प्रश्न-5 गद्यांश के लिए उचित शीर्षक चुनिए

क) नैतिक शिक्षा

ख) सद्भाव

ग) संकुचित दृष्टिकोण

घ) इनमें से कोई नहीं

1 उत्तर

1- घ) भारतीय शिक्षितों का अंग्रेजी -मोह

2- ग) दुर्

3- ग) भारतीय अंग्रेजी मानसिकता की गुलामी की ओर

4- ग) जिसे अंग्रेजी आती हो

5- घ) जिसे स्वभाषा, स्वसाहित्य और उनके लेखकों से गहरा जुड़ाव हो

2 उत्तर

1- ग) दोनों

2- ग) बाल्यकाल में

3- घ) नैतिक

4- क) शिक्षक को

5- क) नैतिक शिक्षा

==========